गोविभा

गोविज्ञान भारती का
संदेशवाहक मासिक

वर्ष : 13 ● अंक : 6 | सम्पादक : नरेन्द्र दुबे, डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे 20 सितंबर, 2015

चित्तशुद्धि : ध्यान के लिए अनिवार्य

— विनोबा

बहुत से लोग चित्त के मल शुद्ध किए बिना ध्यान की, एकाग्र होने की, कोशिश करते हैं, तो चित्त दौड़ता है। जैसे हम भगवान की पूजा के लिए बैठते हैं, तो स्नान कर के बैठते हैं, बिना स्नान किए बैठते नहीं, वैसे ध्यान के लिए पहले चित्त का स्नान होना चाहिए। चित्त के जो मल हैं, उन्हें साफ कर लेना चाहिए। तब ध्यान सधेगा।

कभी ध्यान के लिए दीपक, पानी की धारा वगैरह लेते हैं, वह आलंबन है। परमात्मा अपने बाहर नहीं है। वास्तव में परमात्मा अंदर है, हृदय में। उस पर आवरण है, बुद्धि का, हृदय का। ऊपर ये आवरण है और अंदर वह ढका है, अंदर ज्योति है, लेकिन ऊपर जो आवरण है, उस पर मल है। जैसे लालटेन के अंदर ज्योति होती है और उस पर कांच का आवरण होता है। कांच पर मल हो, तो अंदर की ज्योति साफ दीखती नहीं। अगर मल साफ कर दो, तो ज्योति साफ दीखती है। वैसे बुद्धि पर मल है, इसलिए अंदर जो परमात्मा की ज्योति है, वह दीखती नहीं। मल को साफ कर लें, तो एकदम परमात्मा दीखेगा।

यह ध्यान की मुख्य प्रक्रिया है

ध्यान में एकाग्रता सधती नहीं। क्या कारण है ? चित्त में मल होते हैं। इस वास्ते ध्यान के लिए उत्तम साधन इन दोषों की निवृत्ति है, चित्तशुद्धि की साधना है। चित्त शुद्धि हो जाए, तो ध्यान में एकाग्रता सधेगी। और जब तक चित्त शुद्ध नहीं होगा, तब तक ध्यान सधेगा नहीं। इसलिए दस–पंद्रह मिनट ध्यान के लिए बैठें, यह ठीक है, परंतु रात–दिन ध्यान है, घंटों ध्यान में जाते हैं, ध्यान के अलावा चित्त में कुछ वृत्ति उठती नहीं, काम करते हुए भी ध्यान हो रहा है, मन में और कुछ नहीं है – इसके लिए दोष शुद्ध चाहिए।

नंबर एक चित्तशुद्धि हुए बिना ध्यान सधेगा नहीं। नंबर दो, अगर सधेगा भी तो खुद को यानी जिसे सधा उसे और दुनिया को नुकसान होगा। रावण को चित्तशुद्धि किए बिना ध्यान सध गया था। उसकी एकाग्रता हो गयी, तो भगवान प्रसन्न हुए। भगवान ने उसे वर मांगने के लिए कहा। रावण ने वर मांगा, संहारशक्ति का। भगवान ने उसे संहार शक्ति का वरदान दे दिया। परिणाम, वह संहारक बना।

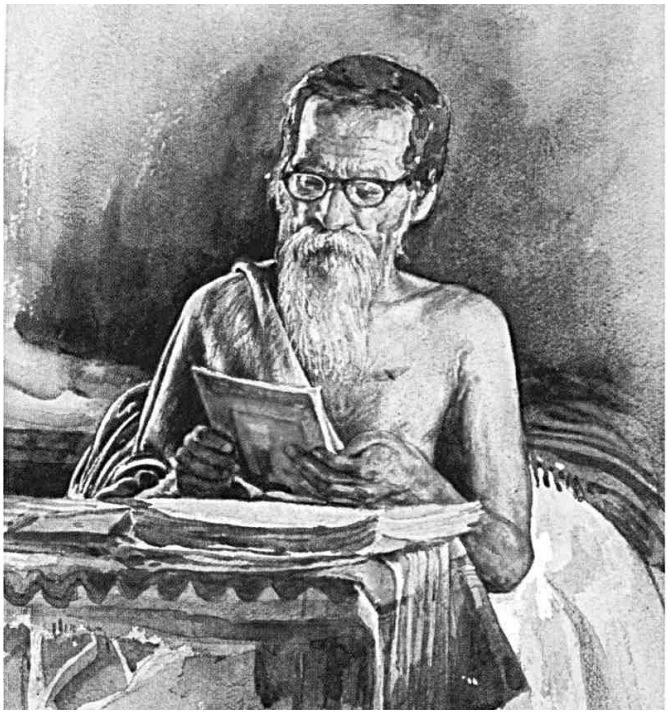

उसका अपना भी नाश हुआ। चित्तशुद्धि किए बिना ध्यान सधा इसलिए ऐसा हुआ।

तीव्र संकल्प शक्ति हो, तो चित्तशुद्धि के बिना भी ध्यान सधता है। इसकी आधुनिक मिसाल देता हूं। जिसने आणविक अस्त्र का सूक्ष्म शोध किया, वह अत्यंत एकाग्र हुआ था, उसका वह पूर्ण ध्यान था। अन्यथा इतने सूक्ष्म शस्त्र की खोज नहीं होती। संकल्प बलवान था और बलवान संकल्प के कारण चित्तशुद्धि हुए बिना भी एकाग्रता हो गयी। परंतु उस शास्त्र से दुनिया का नाश होगा और उसका अपना भी नाश होगा। रावण का उदाहरण पौराणिक है, इसलिए वह काल्पनिक भी हो सकता है, ऐसा आधुनिक चित्त को लग सकता है। इसलिए अणुशक्ति की खोज करने वाले का आधुनिक उदाहरण दिया। उस पर से ध्यान में आता है कि चित्तशुद्धि के बिना भी दृढ़ संकल्प–शक्ति से ध्यान सधेगा, वैसा सधने से लाभ नहीं नुकसान है।

– महागुहा में प्रवेश से

सम्पादकीय

विनोबा जयंती 11 सितंबर

भारतीय संस्कृति में इच्छामृत्यु और विनोबा का ब्रह्मनिर्वाण

विगत दिनों जैन धर्म की मान्यताओं में शामिल संथारा को लेकर आंदोलन किए गए। राजस्थान हाई कोर्ट ने संथारा को आत्महत्या की श्रेणी में रखकर इस पर प्रतिबंध के आदेश जारी किए थे, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने स्टे जारी किया है। इंडियन पीनल कोड के सेक्शन तीन सौ छः और तीन सौ नौ आत्महत्या से संबंधित है। सुप्रीम कोर्ट के बेंच ने इनके बारे में अलग-अलग केसेस में कभी पक्ष में अथवा विपक्ष में निर्णय दिए हैं। क्योंकि मृत्युदान और इच्छा मृत्यु ये दो श्रेणियाँ आत्महत्या नहीं हैं। इन दिनों जोरदार मांग हो रही है कि करुणा प्रेरित मृत्यु-दान दंडनीय अपराध न माना जाए, क्योंकि जैसे हरेक को जीने का अधिकार है वैसे ही जीवन का गौरवपूर्ण अंत करने का अधिकार होना चाहिए। करुणा प्रेरित मृत्यु दान के बारे में भारत में सर्वोच्च न्यायालय ने सात मार्च दो हजार ग्यारह को ऐतिहासिक निर्णय दिया है। नैतिकता, मानवीय संबंध और कानून को ध्यान में रखते हुए प्रत्यक्ष मृत्युदान को गैरकानूनी बताया है। इसमें मरणासन्न मरीज को मृत्यु के लिए अलग से ड्रग्स अथवा इंजेक्शन आदि देकर प्रत्यक्ष सहयोग दिया जाता है, लेकिन अप्रत्यक्ष मृत्युदान को न्यायालय ने कुछ शर्तो के साथ मंजूरी दी है। इसमें मरणासन्न मरीज के शरीर से जीवन रक्षक प्रणाली हटा ली जाती है ताकि उसकी मृत्यु हो जाए। लेकिन उसके पहले हाई कोर्ट के कम से कम दो न्यायाधीश, तीन विशेषज्ञ चिकित्सक की समिति मरणासन्न मरीज के निकट संबंधी और प्रादेशिक सरकार की राय जानन के बाद ही मंजूरी दी जा सकेगी।

आजादी आंदोलन के प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही और भूदान आंदोलन के प्रणेता संत विनोबा भावे ने भी इच्छामृत्यु का वरण करते हुए सात दिन तक बिना आहार पानी लिए अपनी देह त्यागी थी। इसके पहले विनोबा ने अपने जन्मदिन 11 सितंबर, 1981 को कहा, ''बाबा आज छियासी वर्ष का हो गया। तो क्या सोचता है? यह देह काल के कब्जे में है। उससे चिपके रहने में कौन सी मिठास है। आज बाबा का जन्मदिन है इसलिए आपने शांति रखी है। वैसी बाबा की मृत्यु के दिन भी शांति रखिए। मुझे अब करने का कुछ नहीं रहा। इसलिए मैंने किताब पर लिख रखा है उसका कर्तव्य समाप्त हुआ। इस वास्ते प्रारब्ध-क्षय की राह देखते हुए मेरी दिनभर यह कोशिश रहती है कि केवल 'रामहरि' का निरंतर स्मरण करता रहूं। अब कोई कार्य शेष नहीं है। रात को भगवान की गोद में सो जाना है। रात को भगवान मेरी चेतना को मिटा देगा तो मैं प्रसन्नता से राम-हरि का स्मरण करते हुए मर जाउंगा, इसमें कोई शक नहीं है। यही मेरा निरंतर चलता है। जब विनोबा जी ने अपने सेवकों से पूछा कि बाबा सित्यासी साल का कब होगा तो सेवकों ने कहा दस महिना दस दिन के बाद। जब सेवकों ने इसका आशय जानने की कोशिश की तो विनोबा ने कबीर के भजन से जवाब दिया ज्यों की त्यों धरि दीन्ही चदरिया।' बाबा भी यही चाहता है। विनोबा जी ने 8 नवंबर, 1982 की रात्रि से आहार इत्यादि लेना बंद कर दिया था। 15 नवंबर, 1982 को प्रातः 9:30 बजे दीपावली पर विनोब ने अपनी देह का त्याग किया। इस बीच तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने विनोबा जी को आहार इत्यादि लेने के लिए मनाने का प्रयत्न किया, परंतु विनोबा ने इंकार कर दिया। विनोबा की भूमिका यह थी कि जब तक बिना किसी विशेष प्रयास के शरीर रहता है तो रहे, अगर उसके लिए बहुत प्रयास करना पड़ता है तो उसे न रखा जाए। विनोबा जी ने अपने सेवकों से कहा था कि बाबा घड़ी देखे बिना मरेगा भी नहीं। अगर रास्ते में कहीं ठोकर खाकर मर गया तो अलग बात है। नहीं तो घड़ी देखूंगा, बारह बजकर सात मिनट हुए हैं, मैं अब मर रहा हूं। प्राण निकलने में कितना समय लगा यह देखूंगा।' इस कथन के अनुसार विनोबा की जीवन ज्योति निश्चित तिथि और समय पर विलीन हुई।

इच्छा मृत्यु या आत्मकल्याणार्थ देह विसर्जन यह विशेष श्रेणी है। इसलिए वह कानून के दायरे से बाहर है। भारतीय संस्कृति में इच्छामृत्यु का एक स्वरूप पहले से विद्यमान है। हिंदू धर्म में समाधि लेने या कल्पवास की परंपरा और जैन धर्म में संथारा की परंपरा इच्छामृत्यु का ही एक रूप है। जैन दर्शन में संल्लेखना सूत्र में कहा गया है - पंडित मरण अर्थात ज्ञानपूर्वक मरण सैकड़ों जन्मों का नाश कर देता है। ऐसा मरना चाहिए, जिससे मरण सु-मरण हो जाए। आगे कहा है शीघ्र ही अनंत मरण का, बार-बार मरण का अंत कर देता है। यानी मोक्ष प्राप्त होता है। जब जीवन तथा देह से लाभ होता हुआ दिखाई न दे तो परिज्ञानपूर्वक शरीर का त्याग कर दें। मृत्यु के छः प्रकार संभावित हैं : स्वाभाविक मृत्यु - वृद्धावस्था या हृदयगति एकाएक रुक जाना या असाध्य बीमारी के कारण, देश, धर्म, संस्कृति के रक्षणार्थ बलिदान, अपघाती आकस्मिक मृत्यु, मानसिक आवेगों से की गयी आत्महत्या, करुणा प्रेरित मृत्यु-दान, जिसे शास्त्रीय भाषा में यूथेनेसिया कहते हैं, इच्छामृत्यु या आत्मकल्याणार्थ देह-विसर्जन। इन छः प्रकारों से भिन्न ब्रह्मनिर्वाण की श्रेणी है। आध्यात्मिक जीवन साधना की दृष्टि से ब्रह्मनिर्वाण की श्रेणी समाधि या संथारा की विधि से भी श्रेष्ठ मानी जाएगी। संथारा आध्यात्मिक साधना क्रम की विधि है, लेकिन ब्रह्मनिर्वाण की विधि नहीं होती। ब्रह्मनिर्वाण का न संकल्प होता है, न इच्छा होती है। न उसके लिए अलग से विशेष प्रयत्न करना होता है। परिपक्व फल डंठल से जैसे सहजता से अलग हो जाता है वैसे देह आत्मतत्व से अलग हो जाती है। ब्रह्मनिर्वाण स्थितप्रज्ञ पुरुष की अनाकलनीय अद्भुत घटना है। वह किसी भी तरह के संवैधानिक दायरे से निश्चित बाहर है।

शिक्षा में धर्मों का प्रवेश हो

3 दिसंबर, 1969 को वर्धा में महाराष्ट्र शासन के शिक्षा मंत्री श्री मधुकरराव चौधरी ने श्री विनोबा जी से शिक्षा संस्थाओं में नीति और धर्म की शिक्षा के स्वरूप के संबंध में जो चर्चा की, उसका सार यहां प्रस्तुत है। इसमें तीन बातों पर चर्चा हुई थी। 1 शिक्षा में धर्मों का प्रवेश हो, 2 इतिहास नयी पद्धति से लिखा जाए और 3 ग्रामीण अपनी पाठशालाएं स्वयं चलाएं। लेकिन मुख्य जोर शिक्षा में धर्मों के प्रवेश और उसकी पद्धति के निरूपण पर रहा। वर्तमान की केंद्र और राज्य सरकार विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का संचार करने के लिए शिक्षा नीति बना रही है। चर्चा के संपादित अंश यहां पर दिए जा रहे हैं।

प्रश्न : पिछली बार जब मिले थे, तो मैंने विनती की थी कि आप ऐसा कुछ लिखें, जो विद्यार्थियों को संस्काशील बना सके। उस समय आपने कहा था, यह मेरा क्षेत्र नहीं। आपका संकेत था कि मुझे जो करना हो, मैं करूं। तदनुसार आगे हमने इस संबंध में चर्चाएं कीं। नीति–शिक्षा तो दी जाय, पर उसे उपदेश का स्वरूप प्राप्त न हो, इस दृष्टि से एक क्रमिक पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

विनोबा : केंद्र सरकार ने एक समिति नियुक्त की थी। उसने सिफारिश की है कि शिक्षा संस्थाओं में विद्यार्थियों को सब धर्मो का सार सिखाया जाए। सेक्युलरिज्म का अर्थ धर्म निरपेक्ष किया जाता है, जो गलत है। वास्तव में सब धर्मो के लिए समान भाव ऐसा उसका भावात्मक अर्थ किया जाना चाहिएस। शिक्षा के क्षेत्र से सब धर्मो को हटा देंगे, तो लोग संस्कारी ही कैसे बन सकेंगे ? इसी विचार से मैंने 'गीता पर प्रवचन किए। 'कुरान' और 'बाइबिल' के सार प्रकाशित किए। 'जपुजी' और 'धम्मपद' का भी संपादन किया। शिक्षा विभाग इन सबका उपयोग कर सकता है।

अहमदाबाद में दंगे हुए। हम जो पिछला इतिहास सिखाते हैं, उसमें राजाओं के राग–द्वेष पर आधृत लड़ाइयों की बातें होती हैं। उन्हें हमे छोड़ना होगा। यह समझना एक भूल है कि इतिहास माने राजा–महाराजाओं के जीवन की सन्–संवत्वार घटनाएं। जिन राजाओं ने पंजाब में राज्य किया, आज कोई पंजाबी उन्हें नहीं जानता, लेकिन गुरु नानक को सब जानते हैं। बंगाल के पुराने सेन और पाल राजाओं को भी कोई नहीं जानता, लेकिन वहां के चैतन्य महाप्रभु का नाम सब लोगों को मालूम है। देश में इतने राजा–महाराजा आए और गए, लेकिन लोग तो आज तुलसीदास की और उनकी 'रामायण' को ही जानते हैं। महाराष्ट्र से ज्ञानदेव और तुकाराम के नाम को कौन हटा सकता है ? इसलिए इतिहास में इन महापुरुषों को महत्व का स्थान दीजिए और राजाओं को थोड़े में निपटाइये। लेकिन ऐसा तो कोई करता नहीं।

शिवाजी महाराज के पिता का नाम शाहू था। शाहू महाराज पर एक फकीर की कृपा हुई, इसलिए वे 'शाहजी' के नाम से पुकारे जाने लगे। यह फकीर कौन था ? उस जमाने का एक सूफी संत! तब संतों ने उन दिनों लोगों को इसलाम धर्म सिखाया। मार–काट का काम राजाओं ने किया। यह मालूम होने पर कि सोमनाथ के मंदिर की मूर्ति में सोना है, उस मूर्ति को तोड़ने और मंदिर को लूटने का काम राजाओं ने किया। उसका धर्म से कोई संबंध न थ। इसलाम कभी जबरदस्ती करने को नहीं कहता। कुरान में जगह–जगह लिखा है कि 'जबरदस्ती से धर्म का प्रचार नहीं किया जा सकता।' लेकिन आज यह बात कोई नहीं सिखाता। समर्थ स्वामी रामदास ने देखा कि ये सूफी संत शेखसादी का 'करीमा' लोगों सुनाते हैं और उससे लोग उनकी ओर आकृष्ट होते हैं। रामदास स्वामी को लगा कि उन्हें भी वैसे ही वृत्त या छंद में अपने विचार प्रकट करने चाहिए। फलस्वरूप उन्होंने उसी ढंग पर अपने 'मनाचे श्लोक' लिखे। उदाहरण के लिए मना सज्जना भक्ति पंथेची जावे। रामदास ने इसमें एक शब्द अधिक जोड़ा। सूफियों की रचना ग्यारह शब्दों की रही। अंतिम शब्द पर सूफियों का जोर रहा। रामदास ने अपनी रचना 'भुजंगप्रयात' छंद में की। उन दिनों महाराष्ट्र पर इन सूफी संतों और फकीरों की आवाज का अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। हममें से कितने लोगों को यह जानकारी है कि मराठी के 'मनाचे श्लोक' की रचना 'करीमा' पर आधृत है। इसलिए मैं कहता हूं कि इतिहास या तो नयी पद्धति से लिखा जाए या फिर उसे छोड़ ही दिया जाए।

प्रश्न : जब हम धर्मों का सार लिखने की बात करते हैं तो वह सार सब धर्मो के लोगों को मान्य होना चाहिए। हमारे सामने यह एक बड़ी कठिनाई है। यदि आपके समान अधिकारी पुरुष ने यह काम किया, तो सबकी मान्यता मिलना सरल होगा। उसे कक्षाओं के क्रम से तैयार करना होगा। पुराने धर्मग्रंथों को अपनाकर चलते हैं, तो उनके साथ पुरानी रूढ़ियां, परंपराएं और चमत्कार आदि सब आते हैं। आज के विज्ञान युग में ये बातें किसी को पसंद नहीं पड़तीं और न वांछनीय भी सिद्ध होती हैं।

विनोबा : मेरे लिखे 'कुरान–सार' को मुसलमानों ने माना है। प्रकाशन से पहले, बिना पुस्तक देखे ही, पाकिस्तान के कुछ समाचार पत्रों ने उसकी आलोचना की थी। लेकिन पुस्तक के

प्रकाशित होने पर वे इसमें दो वचन अधिक जोड़ने की बात ही सुझा सके थे। मुझे वे वचन विशेष महत्व के नहीं लगे, इसलिए मैंने उन्हें छोड़ दिया था। हिंदुस्तान के प्रसिद्ध मुसलमान मसूदी ने कुरान–सार देखने के बाद कहा कि 'पचीस मौलवी' दस साल तक बैठकर और दस लाख रुपये खर्च करके जो काम न कर पाते, उसे अकेले विनोबा ने कर दिखाया है। एक प्रसिद्ध मुसलमान सज्जन को 'कुरान–सार' इतना पंसद आया कि उन्होंने खुद–ब–खुद उसके शब्दों की सूची तैयार करने का काम उठा लिया। 'कुरान–सार' के अगले संस्करण में यह सूची छपेगी।

तीन वर्षो तक अध्ययन करके मैंने 'बाइबिल' का सार तैयार किया है। वह भी सर्वमान्य हुआ है। मैंने उसे ईसाइयों के धर्मगुरु पोप की सेवा में उनकी सम्मति के लिए भेजा, तो उनकी उत्तम सम्मति के साथ मुझे उनका आशीर्वाद भी मिला।

सिखों के धर्मग्रंथ 'जपुजी' जिसका मैंने संपादन किया है, पंजाब के लोगों को अच्छा लगा। पंजाब विश्वविद्यालय ने उसे पाठ्य पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है। उनकी राय है कि इससे अधिक अच्छा चुनाव हो नहीं सकता। यही बात 'धम्मपद' और 'गीता प्रवचन' के बार में भी कही जा सकती है।

हमने जो लिखा है, सो पचीस वर्षों तक अध्ययन करने के बाद लिखा, अपने को उस–उस समाज का सदस्य मानकर लिखा। अधिकारी पुरुषों की टीकाएं प्राप्त करके स्वयं उसका अध्ययन किया। और उनमें आवश्यक सुधार करके उन्हें प्रकाशित किया।

इसलिए आप लोग बैठिए और इनमें से काम की चीज पसंद कर लीजिए। अब आपको मूल धर्मग्रंथों को उलटने–पलटने की जरूरत नहीं रही। मैंने अपने 'ख्रिस्त–धर्म–सार' में समूची बाइबिल का छठा हिस्सा लिया है।

प्रश्न : इसके लिए कक्षावार क्रमिक योजना कैसे बनाई जाए ?

विनोबा : आप अपने विशेषज्ञों से कहिये कि वे इसका एक प्रारूप तैयार करें। प्रारूप के साथ उन्हें मेरे पास भेजिए। मुझे जरूरी लगा तो कुछ हेर–फेर सुझाऊंगा।

प्रश्न : मैं अपनी पाठ्यक्रम समिति को इसके लिए कहूंगा।

विनोबा : हमने जो अधिकार ज्ञानदेव और तुलसीदास को नहीं दिया, वह आज के शिक्षा अधिकारियों को दे दिया गया है। ऐसा करते हुए आपने उनमें कौनसी योग्यता और बुद्धि के दर्शन किए हैं ?

मधुकरराव : आपकी यह बात सच है। जैसा कि आप कहते हैं सरकार की भी यही इच्छा है कि गांव की जनता अपनी पाठशालाएं चलाए और शिक्षण संस्थाएं अपना शिक्षा क्रम तैयार करे। लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहार में आज यह नहीं हो पा रहा है।

विनोबा : लंदन के एक व्यक्ति ने मुझे लिखा है कि आप गांव को स्वतंत्र रूप से अपने पैरों पर खड़ा होने की जो बात कह रहे हैं, वह मुझे पूरी तरह मंजूर है। लंदन, न्यूयार्क को भी आपके इन विचारों की आवश्यकता है। यहां 'दे इज्म' चल रहा है। 'दे विल डू फार अस' अर्थात विल्सन और जानसन हमारे लिए कुछ करेंगे, ऐसी एक लोग भावना बन गयी है। चाहे कम्युनिज्म हो, सोशलिज्म हो या वेलफेयरिज्म सभी राज्य पद्धतियों में दे इज्म चलता है। लोग मानते हैं कि सरकार हमारा भला करेगी, लेकिन कोई यह नहीं मानता कि हम ही सरकार हैं।

इस तरह से दे इज्म का वाद है तो दूसरा मिलिटरिज्म सेनावाद है। इन्हें सेना का, मिलिटरी का सेवरान यानी आधार आवश्यक होता है। सेना इनका सबसे बड़ा आधार है।

असल में हमें लोगों से कहना यह चाहिए कि आपका भाग्य आपके ही हाथों में है। लेकिन स्वराज्य में लोग इतने पराधीन हो गए हैं कि उनसे ऐसी कोई बात कहीं जाती है तो वे घबरा उठते हैं। मंदिर प्रवेश, समाज सुधार सभी काम यदि सरकार को ही करने हैं, तो फिर लोगों के लिए कौन–सा काम बच जाता है? बाल–बच्चे पैदा करते रहने का ही न?

सर्वोदय कार्यकर्ता श्री बोराड़े का निधन

मुंबई। सर्वोदय कार्यकर्ता श्री दत्तात्रय बोराड़े का विगत दिनों निधन हो गया। पुणे की शिरूर तहसील के पिंपलखेर गाँव में आपका जन्म हुआ। देशभक्ति से ओतप्रोत बोराड़े जी ने गोवासत्याग्रह में भाग लिया, इसके बाद वे विनोबा के संपर्क में आए। विनोबा जी ने उन्हें आदिवासी ग्राम दानी गाँव में सेवा करने की सलाह दी। श्री बोराड़े जी उरण गाँव में सेवा करने लगे। बाद में आपने विविध प्रकार का प्रशिक्षण लिया और नए कार्यकर्ता तैयार किए। मुंबई के काजूपाड़ा में बोराड़े जी ने पाँच बालसंस्कार केन्द्र शुरू किए, बाद में इन्हें महानगर पालिका को सौंप दिया। इसी स्थान पर उन्होंने अपने साथियों के साथ कुआँ खोदा और जल संकट को दूर किया। श्रमजीवी कर्मठ कार्यकर्ता के निधन पर गोविभा परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

स्वास्थ्य समाचार

गोविभा के संपादक श्री नरेन्द्र दुबे जी का स्वास्थ्य स्थिर है। विगत दिनों उच्च रक्तचाप की शिकायत होने से उन्हें 3 दिन अस्पताल में भर्ती करना पड़ा था। चिकित्सकों की देखभाल के बाद वे स्वस्थ्य हैं। अब वे अपने निवास इन्दौर में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

इक्कीसवीं सदी का भारत

- नरेन्द्र दुबे

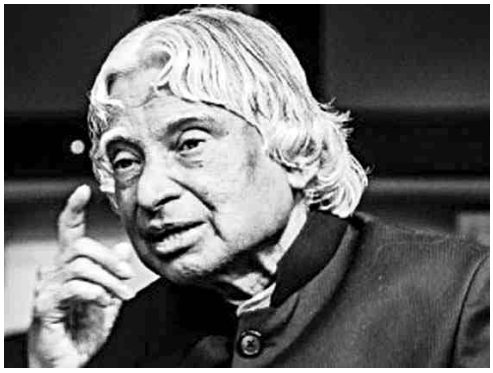

भारत के दो महान वैज्ञानिक सर्वश्री डॉ. अब्दुल कलाम और वाई. सुंदरराजन की सुप्रसिद्ध पुस्तक इंडिया 2020 एक विजन फार द न्यू मिलेनिअम का श्री हरिमोहन शर्मा ने हिंदी में अनुवाद किया है। क्या भारत अगले बीस सालों में विश्व के विकसित राष्ट्रों के समकक्ष आ सकता है? यदि आ सकता है तो कैसे? यही इस पुस्तक का विषय है। यह पुस्तक समर्पित की गई है उस कन्या को जिसने यह आकांक्षा व्यक्त की थी कि वह एक विकसित देश में जीना चाहती है।

आज हमारे देश की मुख्य कठिनाई यही है कि स्वराज्य के आंदोलन के समय देश में आजादी पाने के लिए जैसा आत्मविश्वास और उत्साह था, स्वराज्य के अड़सठ साल बाद देश को दुनिया का समुन्नत और अत्यंत विकसित देश बनाने के लिए वैस उत्साह नहीं है। डॉ.कलाम लिखते हैं, ''जब भारत को विकसित देशों की कतार में खड़े हुए देखने की बात उठती है तो किसी भी भारतीय के चेहरे पर उम्मीद की चमक दिखाई नहीं देती। दिखायी देते हैं - निदंकता और मानवद्वेष से भरे चेहरे।' गहन अंधकार और निराशा से भरे माहौल में ये वैज्ञानिकद्वय भारत की शक्ति, क्षमताओं और उपलब्धियों का वैज्ञानिक अध्ययन और विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए यह आशा जगाने में सफल रहे हैं कि यदि हमारा सारा देश हमारे लोग एक उन्नत और विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प कर लें तो सन् 2020 तक विकसित देशों की श्रेणी में पहुंचने में पूर्ण समर्थ है। विकास की परिकल्पना प्रस्तुत करते समय प्रारंभ में ही गांधीजी की व्याख्या दी गई है जिसमें उन्होंने कहा था, ''देश के लिए किए गए हर काम की कसौटी यह होनी चाहिए कि उसके द्वारा देश के सबसे पिछड़े और गरीब आदमी की आंख के आंसू पोंछे जा सकते हैं या नहीं।''

अस्सी के दशक में भारत सरकार ने टेक्नालॉजी इन्फारमेशन फोरकास्टिंग एंड एसेसमेंट कौंसिल 'टाइफेक' केनाम से एक संस्था का गठन किया था। इसने व्यापक अध्ययन किया, जिसमें देश के पांच सौ अग्रणी वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों, समाजसेवी संस्थाओं, पत्रकारों तथा नगरों और गांवों के लगभग पांच हजार लोगों ने भाग लिया। श्री सुंदरराजन इस संस्था के अध्यक्ष थे और डॉ. कलाम संचालक। 270 पृष्ठों में और 12 अध्यायों में देश और दुनिया के बारे में वैज्ञानिक तथ्यों से भरी प्रेरक जानकारी है। प्रत्येक अध्याय का प्रारंभ महापुरुषों के ऐसे बोध-वाक्यों से होता है, जिसमें उस अध्याय का सार समाया रहता है।

पहले अध्याय का शीर्षक है, 'क्या भारत विकसित देश बन सकता है?' इसमें प्रारंभ में ही ओल्ड टेस्टामेट की यह कहावत दी गई है, ''गरीब को सभी तुच्छ समझते हैं, वे उसके लिए ज्यादा कुछ नहीं करना चाहते। वह उनके पीछे चिल्लाता दौड़ता है, लेकिन वे ध्यान नहीं देते।'' इस अध्याय में प्रौद्योगिकियों के विकास और उसका मानव जीवन पर होने वाले प्रभाव का एक तालिका में विवरण दिया है। जैसे एक लाख वर्ष पहले आदि मानवों ने शिकार के लिए जिन साजो-सामान का निर्माण किया, उससे उनकी क्षमता में वृद्धि हुई।

3500 साल पहले नाव और पाल नौकाओं का आविष्कार हुआ, 800 साल पहले घड़ी, कुतुबनुमा और मापन यंत्रों का विकास हुआ, 95 साल पहले वायुयान का, 80 साल पहले कारों का और पचास साल पहले कम्प्यूटरों का आविष्कार हुआ, 35 साल पहले लेजर, 30 साल पहले अंग प्रत्यारोपण, 20 साल पहले केट स्केन और मात्र 10 साल पहले उन्नत पौध आनुवांशिकी और इंटरनेट का आविष्कार हुआ। इन सारे आविष्कारों ने मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिए। जिस देश ने जितनी तेजी से इन वैज्ञानिक प्रविधियों को अपनाया और विकासकिया उतनी ही तेजी से उसका विकास हुआ है। प्रौद्योगिकी का मानव जीवन से निकट का संबंध है। इसलिए सब आवश्यक प्रौद्योगिकियों पर प्रभुत्व प्राप्त करना हमारा मुख्य उद्देश्य और लक्ष्य होना चाहिए। देश के लोगों को इस लक्ष्य को वरीयता देना होगी।

दूसरे अध्याय में अन्य देशों में हो रहे विकास का संक्षिप्त लेकिन तुलनात्मक विवरण है। इसमें अमरीका, यूरोप, चीन, मलेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया और इजरायल का विशेष उल्लेख है। इन देशों ने जो चमत्कारिक उपलब्धियां हासिल की, उसके कारणों की समीक्षा की गयी है। जैसे इजरायल ने अनेक संकटों के बावजूद अपनी भोजन समस्या का हल अनूठे तरीके से किया। वे 'एग्री फूड'

कृषिजन्य भोज्य पदार्थो के विश्वनेता हैं। उन्होंने दूध, फल और सब्जियों के उत्पादन में उल्लेखनीय सफलता हासिल की। भारत में जहां प्रति मवेशी वार्षिक दूध उत्पादन मात्र 500 लीटर है वहीं इजरायल में वह 7,000 लीटर है। यह एक विश्व रिकार्ड है। दुनिया के इन सभी विकसित देशों ने अपने समक्ष विकास और उत्पादन के राष्ट्रीय लक्ष्य रखे और निष्ठापूर्वक उत्साह से उन पर अमल किया, इसलिए वे अत्यंत समृद्ध और विकसित देश बने।

तीसरे अध्याय का शीर्षक है 2020 के लिए तकनीकी परिकल्पनाएं भारत की मूल क्षमताएं। लेखकद्वय लिखते हैं कि भारत का मनुष्य बल उसकी मूल सामर्थ्य का महत्वपूर्ण अंग है। वह भारत की एक प्रमुख शक्ति है। हमारी मुख्य प्रौद्योगिकीय और औद्योगिक उपलब्धियों का सेहरा हजारों युवाजनों के सर पर रखा जाएगा, जो देशभर में फैले साधारण स्कूलों और कॉलेजों में पढ़े थे। जो लाखों भारतीय विश्व के विभिन्न भागों में नौकरियां कर रहे हैं, वे आईआईटी जैसी संस्थाओं में प्रशिक्षित नहीं हुए हैं। वे सब भारत की अनाम और मामूली संस्थाओं से आए हैं। इनमें डॉक्टर, इंजीनियर, नर्स, कारीगर, मिस्त्री, कलाकार, लेखक, पत्रकार, अकाउंटेंट, क्लर्क, अध्यापक यहां तक कि भारतीय साफ्टवेयर में जो चमत्कार देखने में आया है, उससे भारी संख्या में ऐसे स्त्री-पुरुष जुड़े हैं, जो अंग्रेजी तक नहीं बोल पाते, लेकिन अंग्रेजी मेनुअलों के निर्देश आसानी से समझ लेते हैं और कम्प्यूटरों को सही ढंग से चला लेते हैं। इन सबके साथ हमारे पास प्रचुर जैव वैविध्य का आधार है। प्रचुर धूप, वैविध्यपूर्ण कृषियोग्य जलवायु, एक संपूर्ण विश्व जिसमें ध्रुव प्रदेश जैसी ठंड, उष्णकटिबंध मंडल की हरियाली, रेगिस्तानी इलाका और काफी वर्षा जल है, हांलाकि इसका हम पूरा उपयोग नहीं करते। हमारे पास चमत्कारिक धातु टिटेनियम के अलावा अनेक दुर्लभ भू-धातुएं हैं। हमारे पास विशाल तटरेखा है, उसमें भी बहुत अधिक उर्जा साधन उपलब्ध हैं। इनका हम उपयोग नहीं कर पाए हैं। जैसे-जैसे हम अपने भू-साधनों का अधिकाधिक उपयोग करेंगे वैसे-वैसे भविष्य के लिए वे हमारी शक्ति बन जाएंगे।

खाद्य, खेती और प्रोसेसिंग शीर्षक वाले चौथे अध्याय का आरंभ तिरुक्कुरल की इन पंक्तियों से होता है, ''अगर किसानों के हाथ ढीले पड़ गये, तो तपस्वियों का तप भी बेकार हो जाएगा।'' भारत ने अकाल और भुखमरी के अनेक दौर देखे हैं। आजादी मिलने के कुछ ही वर्ष पहले बंगाल के अकाल में 40 लाख लोग मरे थे। आजादी के बाद अनेक वर्षों तक हमें अन्न का आयात करना पड़ा। लेकिन सन् 1968-70 के तीन वर्षो में हमने हरित क्रांति की और हमारा देश कुछ ही वर्षो में अन्न में स्वावलंबी हो गया। इसलिए जब 1979 और 1987 में सूखा पड़ा तब उसका जरा भी असर लोक जीवन पर नहीं हुआ।

लेकिन अब संकट पुन: आ रहा है। अब अन्न और कृषि संबंधी जो जानकारी मिल रही है, उसमें यह चेतावनी छिपी है कि यदि हमारी जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान रफ्तार यथावत रही और कृषि उत्पादन में विशेषत: अन्न उत्पादन में हमने समुचित वृद्धि दर प्राप्त नहीं की, तो हमें भविष्य में अन्न आयात करना पड़ेगा जो दस सालों में बढ़ते-बढ़ते प्रति वर्ष डेढ़ करोड़ टन तक जा सकता है। क्योंकि तब हमारी आबादी 130 करोड़ और हमें कम से कम 27 करोड़ टन अनाज की जरूरत होगी। जबकि पिछले कुछ सालों से हम केवल 20 करोड़ टन उत्पादन का आंकड़ा पार नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए अन्न सुरक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा का आधार समझ कर प्रभावी व्यूह रचना करनी होगी।

यद्यपि लेखकद्वय ने अनाज, दूध, साग-सब्जी और फलों के उत्पादन के लिए विस्तृत कार्य योजना प्रस्तुत की है और यह भी लिखा है कि ''मवेशी हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति हैं इसलिए उनके प्रबंधन शैली का चुनाव काफी सोच विचार कर करना चाहिए। नही तो वे हमारे मध्यकालिक और दीर्घकालिक परिकल्पना को प्रभावित कर सकते हैं।'' किंतु मवेशियों के बेतहाशा कतल ओर मांस निर्यात के दुष्प्रभावों का पुस्तक में उल्लेख नहीं है। वैज्ञानिकद्वय को संकरित पशुओं की संख्या वृद्धि द्वारा दूध उत्पादन में वृद्धि करने के लिए विकसित डीएनए पद्धति में विश्वास है, इसलिए उन्होंने हर राज्य में वीर्य बैंक की स्थापना की सिफारिश की है। हांलाकि इतना ही जोर पशुओं के स्वास्थ्य और इसके लिए उन्नत पशुखाद्य का प्रबंध करने पर भी दिया है। भारत भौगोलीय क्षेत्र की भूमि के 50% पर कृषि करता है। यह सुविधा चीन, अमरीका को भी प्राप्त नहीं है। हमारी अधिसंख्य आबादी ग्रामों में है। यह हमारी विशेष शक्ति है। लेकिन जमीन की प्रतिव्यक्ति उपलब्धता दिनोंदिन घट रही है। इस कारण उसमें पूंजी लगाना और लाभ प्राप्त करना कठिन हो रहा है। इसलिए ऐसी रणनीति बनाने की जरूरत है, जिसमें छोटे किसान अपने खेतों के मालिक भी रहें और साथ ही संयुक्त जुताई और अन्य व्यवस्था में भागीदार बनें। वर्षो पूर्व विनोबाजी ने अपने ग्रामदान आंदोलन से ऐसी व्यवस्था विकसित करने का प्रयास किया था। अब देश के ये वैज्ञानिकगण भी वहीं बात कर रहे हैं। — क्रमश:

प्रेरक कहानियाँ

इंसान का साथ

संत खयाम एक बार अपने एक शिष्य के साथ बीहड़ वन से जा रहे थे कि उनके नमाज पढ़ने का समय हुआ। वे दोनों नमाज पढ़ने के लिए बैठे ही थे कि इतने में उन्हें एक शेर की गर्जना सुनाई दी और वह थोड़ी ही देर में आता हुआ दिखाई दिया। शिष्य बेहद घबरा गया और तुरंत समीप के एक वृक्ष पर चढ़ गया, किंतु खयाम खामोशी से नमाज पढ़ते रहे। शेर वहां आया और चुपचाप आगे निकल गया। उसके जा चुकने पर शिष्य वृक्ष से उतरा और नमाज खत्म होनेपर वे दोनों आगे बढ़े। थोड़ी ही देर में संत खयाम को जब एक मच्छर ने काटा, तो उसे मारने के लिए उन्होंने अपने गाल पर चपत लगाई। यह देख वह शिष्य बोला, ''गुरुदेव, क्षमा करें एक शंका है उसका समाधान करें। अभी-अभी थोड़ी देर पूर्व जब शेर आपके समीप आया था, तब आप बिलकुल न घबराये, किंतु एक मच्छर के काटे जाने पर आपको गुस्सा आ गया।'' खयाम ने जवाब दिया, ''तुम ठीक कहते हो। किंतु तुम यह भूल रहे हो कि जब शेर आया था, तब मैं खुदा के साथा था, जबकि मच्छर के काटते वक्त एक इन्सान के साथ। यही वजह है कि मुझे शेर के आगमन की खबर तक न हुई।''

गुन अवगुन अंतर बसहिं

एक बार संत पोयेमन के पास एक व्यक्ति आया और उसने कहा, ''महाशय, मेरा भाई दुष्ट प्रकृति का है। वह मुझसे हमेशा जला-भुना रहता है। मैं उसे माफ करता हूं, मगर इसका उस पर कुछ असर नहीं होता, उल्टा मुझ पर वह और नाराज होता है, ऐसा क्यों ?''

पोयेमन ने उत्तर दिया, ''सच-सच बताओ, तुम उसे माफ करते हो, तब क्या तुम्हारे मन में ये विचार नहीं आते कि तुमने कोई गुनाह नहीं किया है और यह तुम्हें नाहक ही कोस रहा है ? मजहब कहता है कि नासमझों को माफ करो, क्या इसी कारण तुम उसे माफ करते हो ?'' उस व्यक्ति ने हामी भरी, तो संत ने कहा, ''देखो, जब तुम उसे माफ करते हो, तो सच्चे दिल से नहीं करते, बल्कि तुम्हारे दिल में यही खयालात उठते हैं कि गुनाह मैंने नहीं, भाई ने किए हैं और इस कारण तुम उसे माफ कर देते हो। बस, इसी कारण खुदा तुम्हारे भाई को तुम पर खुश होने की इजाजत नहीं देता।''

सुलह

घटना उस वक्त की है जब अब्राहम लिंकन वकील थे। उस वक्त उनका काफी बोलबाला था। एक बार दो भाइयों में घर के बंटवारे के संबंध में विवाद उपस्थित हुआ और दोनों ने न्यायालय द्वारा निपटारा कराना उचित समझा। उनमें से एक भाई लिंकन के पास आया तथा उसने लिंकन से उसकी ओर से मुकदमा लड़ने का अनुरोध किया। लिंकन ने न्यायालय की दोष-हानि बताकर आपस में समझौता करने की सलाह दी, किंतु वह न माना। वे उसे बैठने का कहकर बाहर आए। जैसा कि उनका अनुमान था, दूसरा भाई भी थोड़ी देर में वहां आया। लिंकन ने उसे भी समझौता करने की सलाह दी, पर वह भी इस बात पर राजी न हुआ। उन्होंने उसे अंदर कमरे में बैठने के लिए कहा और बाहर से सांकल लगा दी। दो घंटे बाद उन्होंने जब दरवाजा खोला, तो उन दोनों में सुलह हो चुकी थी। वे दोनों हंसते-हंसते वापस घर चले गए।

वृद्ध ने सिखाया सम्राट को सबक

प्राचीन जापान में एक सम्राट बहुत सनकी था। वह छोटी-छोटी गलतियों के लिए बड़ा दंड देता था। इसलिए प्रजा उससे बहुत भयभीत रहती थी। सम्राट के पास बीस फूलदानियों का एक अति सुंदर संग्रह था, जिस पर उसे बड़ा गर्व था। वह अपने महल में आने वाले अतिथियों को वह संग्रह अवश्य दिखाता था। एक दिन फूलदानियों की नियमित सफाई के दौरान सेवक से एक फूलदानी टूट गई। सम्राट आगबबूला हो गया। उसने सेवक को फांसी पर लटकाने का हुक्म दे दिया। राज्य में खलबली मच गई। एक फूलदानी टूटने की इतनी बड़ी सजा पर सभी हैरान रह गए। सम्राट से रहम की अपील की गई, किंतु वह नहीं माना। तब एक बूढ़ा आदमी दरबार में हाजिर होकर बोला, सरकार! मैं टूटी हुई फूलदानी जोड़ने में सिद्धहस्त हूं। मैं उसे इस तरह जोड़ दूंगा कि वह पहले जैसी दिखाई देगी। सम्राट ने प्रसन्न होकर बूढ़े को अपनी शेष फूलदानियां दिखाते हुए कहा इन उन्नीस फूलदानियों की तरह यदि तुम टूटी हुई फूलदानी को भी बना दोगे तो मुंहमांगा इनाम पाओगे। सम्राट की बात समाप्त होते ही बूढ़े ने अपनी लाठी उठाई और सभी फूलदानियां तोड़ दीं। यह देखकर सम्राट क्रोधावेश में कांपते हुए बोला 'बेवकूफ! ये तुमने क्या किया ? बूढ़े ने दृढ़ता के साथ कहा, 'महाराज! इनमें से हर फूलदानी के पीछे एक आदमी की जान जाने वाली थी। तो मैंने अपने इंसान होने का फर्ज निभाते हुए उन्नीस लोगों के प्राण बचा लिए। अब आप शौक से मुझे फांसी की सजा दे सकते हैं।' बूढ़े की चतुराई और साहस देखकर सम्राट को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने बूढ़े तथा सेवक दोनों को माफ कर दिया। बुराई से लड़ने के लिए साहस और आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। यदि निर्भीकता से डटकर खड़े रहें तो बुराई का अंत अवश्य होता है।

रजि. MPHIN/2003/11246
Postal Reg. MP/ICD/1106/2015-17
गोविभा
20 सितंबर, 2015

गोरक्षा सत्याग्रह का अगला कदम

गोवंश रक्षा भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण हमारे अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न है। यही कारण है कि गांधी जी ने इसे आजादी के साथ भी जोड़ा था। इसलिए भारत की संसद मे लगभग एक दर्जन विभिन्न सांसदों द्वारा इसकी मांग उठाते हुए विधेयक प्रस्तुत किए गए। जिस पर सरकार की तरफ से अनुकूल आश्वासन भी मिले। भारतीय संविधान की धारा 48 में नीति निर्देशक तत्वों में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है। हमारी संविधान सभा में अनेक मुस्लिम सदस्यों ने इसका जोरदार समर्थन किया। इसे बुनियादी अधिकार के समान घोषित करने की अपेक्षा रखी थी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने इसे अपनी कार्य समिति में प्रस्ताव के रूप में पारित किया था। जनता पार्टी की सरकार के समय लोकसभा में इस विषय के लिए एक निजी विधेयक पारित हुआ। विनोबा भावे ने गोवंश रक्षा के लिए आमरण अनशन किया तब 1977 और 1979 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने संविधान संशोधन का वादा किया तथा विधेयक भी सदन पटल पर रखा था। इसके अलावा विविध समितियों द्वारा कृषि एवं ग्रामीण भारत के लिए पशु संवर्धन की अनुशंसा की। इस पृष्ठभूमि को देखते हुए अभी तक यह अनिवार्य विधिकार्य क्यों नहीं पूरा हो सका यह सवाल है। इस कारण प्रकृति, पशु और मानव का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। विज्ञान और अध्यात्म दोनों दृष्टियों से देखते हुए विनोबा जी के आदेश पर देवनार कत्लखाने के सामने 33 सालों तक 24 घंटे अखंड सत्याग्रह किया। पांच लाख गोसेवक और किसानों ने इसमें भाग लिया। महाराष्ट्र में हाल ही में गोवंशहत्या बंदी कानून बन गया है, परंतु केंद्रीय कानून बनना शेष है। इसलिए इस सत्याग्रह को दिल्ली में जारी रखने का निर्णय लिया गया। इस परिप्रेक्ष्य में विनोबा जी के पवनार, वर्धा स्थित आश्रम में गोवंशरक्षा सत्याग्रह : अगला कदम विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

संगोष्ठी में सर्वसम्मति से दिल्ली में गोवंश रक्षा सत्याग्रह करने का निर्णय लिया गया। इसकी दो ही मांगें हैं : इस देश में किसी भी उम्र की गाय-बैल न कटे इसका केंद्रीय कानून बनाया जाए और मास निर्यात बंद हो।

पद्धति के रूप में यह सत्याग्रह अहिंसक, अराजनीतिक और असांप्रदायिक और सौम्यतम होगा। इसकें केंद्र में ग्राम स्वराज रहेगा।

संगोष्ठी में डॉ.रामजी सिंह, श्री अमरनाथ भाई, सर्वोदय समाज मे संयोजक आदित्य पटनायक, सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री रमण कुमार, देवनार गोरक्षा सत्याग्रह संचालन समिति, मुंबई के अण्णा जाधव, सतीश नारायण, सुधाकर झाडे, मधुकांता बेन दोशी, यशवंत जोशी, हरिभाउ तलेले, टिकमचंद, रंजना जाधव आदि के साथ छततीसगढ़ से लोकनाथ भाई, श्री साहू जी, उत्तरप्रदेश गांधी निधि के पूर्व मंत्री श्री कृष्णकांत सहाय, पवनार आश्रम की सुश्री कालिंदी बहन, गीताई मिशन आचार्य कुल की प्रवीणा बहन, सेवाग्राम आश्रम के अध्यक्ष श्री जयवंत मठकर, अखिल भारत कृषि गोसेवा संघ के कार्यालय मंत्री योगेंद्र फतेहपुरिया, नयी तालीम समिति के अध्यक्ष श्री सुगन बरंठ, खुदाई खिदमतगार के फेजलभाई शेख, राजस्थान गोसेवक कन्हैया भाई, महाराष्ट्र प्रदेश सर्वोदय मंडल के पूर्व अध्यक्ष बागाड़े, महाराष्ट्र ग्रामदान बोर्ड के अध्यक्ष श्री आबा कांबले, मध्यप्रदेश से श्री एकलव्य दास, वर्धा से अशोक बंग, पद्मजा बंग, गांधी शांति प्रतिष्ठान जलगांव से जॉन ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

प्रकाशक :
नरेन्द्र दुबे, कार्याध्यक्ष, गोविज्ञान भारती
द्वारा मुंबई सर्वोदय मण्डल, 299, ताड़देव रोड, नानाचौक
मुंबई-400 007, फोन : (022) 23872061

डी-37, सुदामा नगर, इन्दौर-452 009
फोन : 0731-2489475, मो.: 97542 20781
www.govigyan.org ● e-mail : vinobaji1@gmail.com
prof.pushpendra@gmail.com

मुद्रण : श्रीकृति ग्राफिक्स, बी-133, सुदामानगर, इन्दौर
मो.: 98269 51703

आजीवन शुल्क : 1,000 ● वार्षिक शुल्क : ₹ 50 ● एक प्रति : ₹ 5

गोविभा
रजि. MPHIN/2003/11246
Postal Reg. MP/ICD/1106/2015-17

सेवा में,